बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दम मदार • बेड़ा पार

लुटायेंगे सदा हम करबला वालों पे जानो तन
अगर है यह गुनह तो यह गुनहगारी न छोड़ेंगे

वक़ारे अज़मते ख़ूने मुहम्मद की क़सम 'मिस्बाह'
लगेंजितने भी फ़तवे ताज़ियादारी न छोड़ेंगे

ताज़ियादारी जायज़ है?

जवाज़े ताज़ियादारी इनआमे फ़ज़्ले बारी

•

अज़

पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअत हज़रत अल्लामा अलहाज मुफ़्ती
शाह अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी
मोबाइल न. :9793347086
दारूल इफ़ता, जामिआ मदारूल उलूम मदीनतुल औलिया,
दारून्नूर मकनपुर शरीफ़, कानपुर (यू.पी.)

नाशिर
मदार बुक डिपो
मकनपुर शरीफ़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्तिफ़ता

क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़तियाने शरए मतीन मसायले ज़ेल में...................................

1. दस मुहर्रम के मौके़ पर यादगारे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के तअल्लुक़ से जो ताज़िया बनाया जाता है और उनकी याद मनाई जाती है। यह कैसा है ?

2. ताज़िया की कोई शक्ल मुतअय्यिन नहीं है और न ही रस्म व रिवाज मुतअय्यिन हैं तो क्या इन सब के तअल्लुक़ से एक ही हुक्म है या मुख़तलिफ़ ?

3. ताज़िया बनाकर बाज़ जगहों पर घुमाया भी जाता है ताकि ख़वातीन ज़ियारत कर लें। इसके लिये क्या शरई हुक्म है ?

4. क्या कोई ऐसी सूरत है कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की याद में दस मुहर्रम को हम उनके रौज़े की शक्ल या कोई और शक्ल बना सकते हैं जिस तरह हम बारह रबीउल अव्वल शरीफ़ में गुम्बदे ख़ज़रा बनाकर घुमाते हैं ?

5. क्या नफ़्से ताज़िया में कोई क़बाहत है ?

अलमुस्तफ़ती

सैय्यद अली अशरफ़

कछौछा शरीफ़, अम्बेडकर नगर (यू.पी.)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिअहलिही वस्सलातु अला अहलिहा अम्माबाद

जवाब :

महबूबाने खुदा की पैरवी करनी चाहिये (शआयरल्लाह) :1.मज़हबे इसलाम में यादगार की अहमियत और आसार का एहतेराम असहाबे अक़ीदत व मुहब्बत को रोज़े अव्वल से सिखाया गया है । उश्शाक़े बारगाहे नुबूवत की एक एक अदा व अन्दाज़ हमारे लिये मिशअले राह और नमूनए अमल है । अल्लाह पाक का इरशादे मुबारक है,, (तर्जुमा)''और पैरवी करो रास्ते की उसके जो पहुंच गया मुझ तक,,इस इरशादे मुबारक से हमें पैग़ाम दिया जा रहा है कि महबूबाने बारगाहे इलाह और ख़ासाने ख़ुदा की पैरवी और मुताबिअत में ही अल्लाह और उसके रसूल की ख़ुशनूदी है और हमारी कामयाबी। इस मुक़ाम पर सबसे पहले शआयर व आसार को समझना ज़रूरी है ताकि किसी की यादगार मनाने में हमें जादए शरीअत पर गामज़न रहने की हलावत भी मिलती रहे । जिन चीज़ों से अल्लाह तआला या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम या ख़ासाने ख़ुदा की याद ताज़ा होती है कुरआने पाक में उनको शआयरल्लाह, आयातल्लाह यानी अल्लाह की निशानी क़रार दिया है चुनान्चे इरशादे बारी तआला है (तर्जुमा)''बेशक सफ़ा व मरवा (पहाड़ियां) अल्लाह की निशानियों से हैं'' शआयरल्लाह की तफ़सीर करते हुये हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल सैयद नईम उद्दीन मुरादाबादी अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में तहरीर फ़रमाते हैं ''शआयरल्लाह से दीन के आलाम यानी निशानियां मुराद हैं ख़्वाह वह मकानात हों जैसे काबा, अरफ़ात, मुज़दलफ़ा, जिमार बलीह, सफ़ा, मरवा, मिना, मसाजिद या अज़ मिनह जैसे रमज़ान, अशहरे हराम यानी ज़ीक़ादह, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम और रजब, ईदुल फ़ित्र व ज़ुहा जुमा या अय्यामे तशरीक़ या दूसरे अलामात जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े

बाजमाअत, नमाज़े जुमा, नमाज़े ईदैन, ख़तना यह सब शआयरे दीन हैं ।

क़ुर्बानी का जानवर अल्लाह तआला की निशानी है : कुर्बानी के जानवरों को अल्लाह तआला यादगारे ज़बीहुल्लाह होने की वजह से अपनी निशानी क़रार देता है। फ़रमाने रब्बे ज़ीशान है,,(तर्जुमा)''यानी और हमने कुर्बानी के जानवर तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों से कर दिये,, (हज, आयतः26) वह पत्थर जिससे पैग़म्बर इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की याद आती है उसे अल्लाह जल्ला शानहू अपनी आयत क़रार दे रहा है,,(तर्जुमा)''इसमें खुली निशानियां हैं मुक़ामे इब्राहीम यानी वह पत्थर जिसपर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम काबा मुअज़्ज़मा की तामीर के वक़्त खड़े होते थे,, ग़रज़ यह कि जिससे अल्लाह या अल्लाह वालों की याद आये वह अल्लाह तआला की निशानी है ।

अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करना चाहिये : और अल्लाह तआला की निशानियों की ताज़ीम व तौक़ीर बजा लाने का हुक्म अल्लाह पाक की तरफ़ से आया है और इस ताज़ीम व तौक़ीर बजा लाने को ''दिल का तक़वा'' कहा गया है चुनान्चे अल्लाह पाक का इरशाद है,(तर्जुमा)''और जो अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करे तो बेशक यह दिलों का तक़वा है,, इमामे इश्क़ व मुहब्बत हज़रत क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ''इन मुक़द्दस मुक़ामात की इज़्ज़त व हुरमत जहाँ वहयिये इलाही आई और नुज़ूले कुरआन की सआदत हासिल हुई या जिन मुक़ामात पर जनाब जिब्रील व मीकाईल आते रहे या दूसरे मुअज़्ज़ज़ फ़रिश्ते उतरते और अपनी मनाज़िल की जानिब जाते रहे या वह मैदान जहाँ तस्बीह व तक़दीस की सदाएं गूंजती रहीं, जहाँ सैयदुल अम्बिया अलैहिस्सलाम ने औक़ाते अज़ीज़ बसर फ़रमाये या जहाँ से सुन्नते नबवी व इसलाम की तबलीग़ व इशाअत हुई। वह मसाजिद व मकान जहाँ वहदानियत व इसलाम के दर्स दिये गये या दर्स व तदरीस के गवाह उस मुक़ाम के दरोबाम हुये या वह मुक़ाम जहाँ सैयदुर्रुसुल ने क़याम फ़रमाया

वह मनाज़िल व मुक़ामात जहाँ से नुबूवत के चश्मे जारी हुये और फ़ैज़ाने रिसालत ने तारीकी को नूर में बदला वह मुक़ाम जिसको सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम के जसदे मुबारक के लम्स की सआदत हासिल हुई और वह जगह जहाँ सरवरे आलम आज भी महवे इस्तिराहत हैं। उन मुक़ामात की इज़्ज़त व तौक़ीर लाज़िम है और उन मुक़द्दस मुक़ामात की हवाएं सूंघी जानी ज़रूरी है और मुक़ामात के दरोबाम की तक़बील क़ल्ब व रूह का सरमायए हयात है,(तर्जुमा अशआर)"यानी ऐ सैयदुल मुरसिलीन के काशानए अक़दस और आपसे मन्सूब चीज़ो! जिनसे लोगों ने हिदायत हासिल की और मोजज़ात जो उन पर वारिद हुये मेरे पास तुम्हारे लिये सोज़िशे इश्क़ और ऐसा वालिहाना जज़बए शौक़ है जिससे चिन्गारियां भी रोशन हैं । ख़ुदा की क़सम मेरा जज़बा यह है कि मैं उन मैदानों या दीवारों को अपनी आंखों में समो दूँ । मैं इन मुक़ामात को इस कसरत से बोसे दूं जिससे मेरी सियाह दाढ़ी तक ख़ाक आलूद हो जाये । अगर मवाक़े मयस्सर होते और मवानेअ सद्देराह न होते तो मैं हमेशा उन मुक़ामात की ज़ियारत करता बावजूद कि मेरे रुख़सार गर्द आलूद हो जाते। लेकिन अनक़रीब मैं इन मकानों और हुजरों के रहने वालो पर सलात व सलाम के तोहफ़े पेश करूँगा जो मुश्क से ख़ुशबू की लपटें मारती होंगी और जिसे सुबह व शाम ढांक लेंगे । उनको पाकीज़ा दरूद और ज़्यादा सलाम बरकात से मख़सूस करती हैं । (शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2 सफ़ा 113-114)

सहाबए किराम का मामूल : इमामे इश्क़ व मुहब्बत हज़रत क़ाज़ी अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आसार व तबर्रुकात और यादगार व शआयर के अदब व एहतेराम और इज़्ज़त व तौक़ीर का जो दर्स दिया है बिऐनिही यही सहाबा व ताबिईन के मामूलात हैं और सल्फ़ सालिहीन का तरीक़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का मामूल था कि वह बिसतरे नबवी की उस जगह को जहाँ हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हुआ करते थे

अपने हाथ से मस फ़रमाते छूते थे फिर उस हाथ को अपने चेहरे पर मलते थे।(शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2, सफ़ा 110) हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुलाह बिन अब्दुल क़ारी से मरवी है कि मैंने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा,(तर्जुमा)''आप मिम्बर के उस मुक़ाम पर हाथ फेरते जहाँ रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम बैठते थे फिर उस हाथ को अपने चेहरे पर मल लेते।''(अलशरहुल कबीर3/495 बहवाला शिफ़ाउल फ़वाद उर्दू अलशैख़ मुहम्मद अलवी मालिकी)

आसार व शआयर का एहतेराम : यह जज़बए मुहब्बत और हुस्ने अक़ीदत ही बहुत सारे अशकाल के लिये हल्लुल मुश्किलात है और शरीअते ताहिरा से पर्दा उठाकर हक़ीक़ते शरीअत तक पहुँचा देता है। सहीफ़ए मुहब्बत में निस्बतों का एहतेराम सिखाया जाता है । कहते हैं कि निस्बत से शै मुमताज़ हो जाती है चुनान्चे इसका अन्दाज़ा उश्शाक़े रसूल की अदाओं से लगाया जा सकता है । हज़रत इब्ने सीरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, अगर मेरे पास महबूब सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम का एक बाल भी होता तो वह मुझे दुनिया व माफ़ीहा से ज़्यादा प्यारा होता।(बुख़ारी शरीफ़)

असहाबे रसूल इस मूए मुबारक के हुसूल के लिये हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम के गिर्दा गिर्द तवाफ़ करते थे और एक भी मूए पाक सरे मुक़द्दस से जुदा होता सहाबए किराम उसे अपने हाथों पर ले लेते चुनान्चे हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है,(तर्जुमा)''यानी मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम को देखा कि हज्जाम आपके बाल तराश रहा था और आपके सहाबा आपके गिर्द तवाफ़ फ़रमा रहे थे उनकी चाहत यह थी कि आपका हर बाल ज़मीन पर गिरने के बजाए उनमें से किसी के हाथ पर गिरे।(मुस्लिम शरीफ़ किताबुल फ़ज़ायल) सहाबए किराम आप सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम के वज़ू के ग़ुसाला के लिए एक दूसरे पर गिर गिर जाते कि किसी

सूरत हुज़ूर का गुसाला मयस्सर हो जाये अगर किसी को एक क़तरा भी मयस्सर नहीं होता तो वह उस सहाबी के हाथ पर अपना हाथ मल लेते ताकि तरी की कुछ निस्बत ही हासिल हो जाये ।(बुख़ारी शरीफ़) यह असहाबे रसूल हैं, यह अहले मुहब्बत हैं और मुहब्बत को दलील व हुज्जत की ज़रूरत नहीं पड़ती यहाँ तो ऐसा मामला है कि "बेख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क :: अक़्ल है महवे तमाशाए लबे बाम अभी,, यह तो सरकारे इश्क़ व मुहब्बत के गुसालए पाक और मूए पाक हैं । शैदायाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम तो आपका बोल मुबारक और ख़ूने मुक़द्दस भी ज़मीन पर नहीं गिरने देते बल्कि अदब व एहतेराम और शौक़े मुहब्बत में उसे भी नोशे जान फ़रमा लिया करते थे।(शिफ़ा शरीफ़)

निस्बत का मुक़ाम : मुक़ामे इब्राहीम की ज़ियारत करना और हजरे असवद को चूमना भी इसी निस्बत व अक़ीदत की जलवा सामानी है । बाबे काबा व हतीम के होते हुये मुक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला बनाना और हजरे असवद को चूमना तो अक़्ल व ख़िरद भी तसलीम करते हैं कि इसे बराहे रास्त निस्बते रसूल मयस्सर है लेकिन निस्बत का यह अन्दाज़ कितना अनोखा और निराला है कि अगर वहाँ तक हाथ या मुँह की रसाई न हो सके तो किसी लकड़ी या उस जैसी चीज़ को संगे असवद से छुवाकर उस लकड़ी या उस जैसी चीज़ को चूमा जाये और अगर लकड़ी या उस जैसी किसी चीज़ की भी रसाई वहाँ तक मुमकिन न हो तो संगे असवद की तरफ़ अपना हाथ करके ख़ुद अपना ही हाथ चूम लिया जाये और यह तसव्वुर कर लिया जाये कि गोया संगे असवद ही को चूमा है।"निस्बती होने के लिये यह ज़रूरी नहीं कि जिससे निस्बत दी जा रही है उससे बराहे रास्त बिला वास्ता मस हो,, मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब फ़ाज़िल बरेलवी तहरीर करते है,, और हाथ न पहुंचे तो लकड़ी से संगे असवद मुबारक को छूकर उसे चूम लो यह भी न बन पड़े तो हाथों से उसकी तरफ़ इशारा करले उसे

बोसा दे। मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम के मुँह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं यही क्या कम है।(फ़तावा रज़विया जिल्द 4 सफ़ा 701)। निस्बतों का यह तौर और अक़ीदे का यह अन्दाज़ शरअ मुतहहर में तसव्वुरात की दुनिया को वुसअत अता करके हक़ीक़ते शरीअत का लिबास इनायत करता है। हदीसे एहसान से इस तसव्वुर को मज़ीद तक़वियत मिलती है जिसमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं,,(तर्जुमा)''इबादत में एहसान यह है कि अल्लाह पाक की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसे देख रहे हो । 'कानका तराहु' में तसव्वुर को जो जमाल व कमाल अता किया गया है वह अक़ीदत केशों पर मख़्फ़ी नहीं है जब ज़हन व फ़िक्र में इस तरह का तसव्वुर हक़ीक़त अपनी जलवागाह बनाता है तो ताज़िया के झरोकों से हज़रत इमाम आली मुक़ाम इमाम हुसैन शहीदे करबो बला की ज़ियारत नसीब होती है ।

ताज़िया बनाना जायज़ व मुस्तहसन है : इसलिये दस मुहर्रमुल हराम के मौक़े से यादगारे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तअल्लुक़ से जो ताज़िया बनाया जाता है और इमाम पाक की याद मनाई जाती है न यह कि सिर्फ़ जायज़ व मुबाह है बल्कि महबूबे अहले सुन्नत मन्दूबे असहाबे अक़ीदत और मरग़ूबे शैदायाने शाहे शहादत है । ताज़िया से हुसैनियत की तशहीर होती है और अहलेसुन्नत व अहले बिदअत में ताज़ियादारी से इम्तियाज़ होता है इसलिये बिला शक व शुबह यह अम्र मुस्तहसन है। हज़रत इमाम इब्ने जरीर लफ़्ज़े शिआर की तफ़सीर में लिखते हैं कि यह शईरत बरवज़्न फ़ईलत की जमा है जिसका मानी है वह अलामत जिससे किसी चीज़ की पहचान हो सके,,(तर्जुमा)''यानी चीज़ों से हक़ व बातिल की शिनाख़्त हो सके उनको शआयरल्लाह कहते हैं ।

ताज़िया हक़ व बातिल में इम्तियाज़ पैदा करता है : इस कुल्लिया के पेशे नज़र यह साबित व मुतअय्यिन है कि ताज़िया फ़ी ज़मानिना हमारे दयार में

अहलेसुन्नत का शिआर बन चुका है और ताज़ियादार सिर्फ़ अहले सुन्नत में पाये जाते हैं। अहले बिदअत व शिनाअत इसे नाजायज़ समझते हैं इल्ला माशा अल्लाह। लिहाज़ा ताज़िया से हुसैनियत की पहचान होती है और यह यज़ीद पलीद को रज़ियल्लाहु अन्हु लिखने वालों और सैयदना इमाम हुसैन पाक रज़ियल्लाहु अन्हु को इमाम न मानने वालों के दरमियान इम्तियाज़ पैदा करता है इसलिये इसके बनाने और निकालने में शरअन कोई क़बाहत नहीं है ।

ताज़ियादारी यादगारे इमाम हुसैन है : ताज़िया बनाने वाले ताज़िया बनाने के वक़्त सिर्फ़ यह नियत करते हैं कि इस यादगारे इमाम आली मुक़ाम इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को हसीन से हसीनतर बनायें और अपने हुनर का भरपूर मज़ाहिरा करें। बाज़ ताज़ियादार शबीहे रौज़ए इमाम आली मुक़ाम बनाने में माहिर होते हैं वह हूबहू नक़्शा उतार देते हैं और बाज़ इस काम में कच्चे होते हैं वह मिसाल क़ायम नहीं कर पाते और बाज़ ऐसे भी हैं जो सिर्फ़ इमाम पाक की मुहब्बत में उनकी यादगार मनाने के लिये एक तसव्वुराती महल का नक़्शा बनाकर उसी को यादगारे इमाम तसव्वुर कर लेते हैं । बहरसूरत नियत महमूद है इसलिये इसमें कोई हर्ज नहीं जिस तरह हजरे असवद के बोसा लेने में लकड़ी या अपना ही हाथ चूम लेने से हजरे असवद का बोसा हक़ीक़त में नहीं होता है लेकिन शरए मुतहहर ने इसे बोसा के मुतबादिल मान लिया है ।

मिम्बरे रसूल का एहतेराम : इसी तरह हमारे दयार व अमसार में अहलेसुन्नत के मदारिस व जलसागाहों में जो स्टेज बनाया जाता है उमूमन हिन्दुओं ग़ैर मुस्लिमों और बे एहतियात लोगों के टेन्ट हाउस से सारा सामान लाया जाता है, तख़्त दरियां, ग़लीचे, चान्दनी और लाउड स्पीकर बाजा मशीन वग़ैरह सब दूसरों के यहाँ से आता है । ख़ुतबा हज़रात फ़रमाते हैं ''मिम्बरे रसूल'' से बड़ी ज़िम्मेदारी के साथ बोल रहा हूँ । लीजिये साहब!तख़्त, दरियां, ग़लीचे, चान्दनी हत्ता कि कुर्सी और लाउड स्पीकर सब कुछ किसी

राम सिंह या शंकर दयाल वग़ैरह के यहाँ से लाया गया है लेकिन सुन्नी उलमा, फ़ुज़ला, ख़ुतबा और नुक़बा फ़रमा रहे हैं कि यह मिम्बरे रसूल है। न इस मिम्बर या स्टेज पर कभी हुज़ूर रसूले करीम ने तशरीफ़ रखा न यह उनके घर की चीज़ों से बना लेकिन फिर भी मिम्बरे रसूल है। टेढ़ा हो, ऊँचा या छोटा हो फिर भी मिम्बरे रसूल, न कोई आलिम मना करता है कि इसे मिम्बरे रसूल कहना हराम है और न किसी मुफ़्ती साहब को एतराज़ है। अपना काम हो रहा है सब ठीक है। तो फिर भला छोटे बड़े ऊँचे नीचे रंग बिरंग के यादगारे इमाम हुसैन यानी ताज़िया पर क्योंकर किसी को एतराज़ है।

किसी भी जायज़ नक़्शे में ताज़िया बनाना जायज़ है : किसी पाक कपड़े के ग़िलाफ़ में कुरआन पाक को रखा जाये, किसी पाक लकड़ी से रेहल कुरआन पाक बनाया जाये और किसी शक्ल या किसी नक़्शे में बनाया जाये कुरआन मजीद उसपर रखा जायेगा इसलिये वह मोहतरम है उसे चूमा भी जायेगा और सीने से भी लगाया जायेगा। यह सब महमूद व मुस्तहसन है इसी तरह ताज़िया यादगारे इमाम पाक है जवाज़ के लिये इतना काफ़ी है।शरअ शरीफ़ का एक क़ायदा कुल्लिया है,,अल अस्ल फ़िल अशयाउल इबाहति,,ताज़िया में जो लकड़ी जो खपच्ची, जो तांत जो धागा और जो काग़ज़ इस्तेमाल होता है वह सब इन्फ़िरादी तौर से जायज़ व मुबाह और पाक व साफ़ हैं अब जबकि वह यादगारे हुसैनी यानी ताज़िया में इकट्ठे लगा दिये गये तो नाजायज़ क्योंकर हो जायेंगे।बिला शुबहा वह अब भी जायज़ हैं।

ताज़िया घुमाना जायज़ है : बाज़ शहरों में ख़ानए काबा व गुम्बदे ख़ज़रा का नक़्शा बनाकर ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम के मौक़े से शहरों में जुलूसे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम के आगे आगे घुमाया जाता है बाज़ शहरों में मक्का मुअज़्ज़मा के ख़ानए काबा और गुम्बदे ख़ज़रा रोज़ए मुक़द्दसा सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैह व

आलिही वसल्लम का नक़्शा शहरों के सद्र दरवाज़ों पर बनाया जाता है, आम्मतुल मुसलिमीन उसकी ज़ियारत करते हैं। इससे शौकते इसलामी का मुज़ाहिरा होता है। अपनों और बेगानों के दिलों में उनकी वक़अत बिठाई जाती है और अब तो बाज़ मोलवियों और मुफ़्तियों के यौम के मवाक़े पर उनकी क़ब्रों और गुम्बदों का फोटो और नक़्शा भी ख़ूब बनाया और घुमाया जा रहा है। बाज़ उलमा के मज़ारों के गुम्बद बतौर पहचान मस्जिदों और मीनारों की जगह फिट किये जा रहे हैं ताकि वह मस्जिद या वह जगह उस जमाअत की याद दिलाये और उसकी तरफ़ इशारा करे ।

ताज़िया घुमाने से अहले बातिल के दिल पर रोब तारी होता है : इमामुद दुनिया वल आख़िरह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु वारज़ाहु अन्ना की यादगार ताज़िया मुतबर्रिका को जुलूसे हुसैनी के साथ गश्त कराने में कौन सा अम्रे शरई मानेअ है। हाँ अहले बिदअत व गुमराहों के दिल इस यादगारे हुसैनी को देखकर ज़रूर जलभुन जाते हैं। ताज़िया को जुलूसे हुसैनी के साथ गश्त कराने में जहाँ अग़यार पर इसलामी रोब व दबदबा क़ायम हो जाता है वहीं मुसलमानों के मर्द व ज़न व तिफ़्ल व पीर सबके अन्दर जज़्बए हुसैनियत और हौसलए ईसार व वफ़ा क़ायम हो जाता है और ऐसा जज़्बा क़ायम करना ऐन कुरआन व सुन्नत का मनशा है।

दसवीं मुहर्रमुल हराम को हज़रत इमाम आली मुक़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वारज़ाहु अन्ना के रोज़ए मुक़द्दसा की मिसाल या किसी और जायज़ शक्ल में यादगारे इमाम पाक की कोई अलामत बनाना और मिसाले गुम्बदे ख़ज़रा की तरह गलियों कूचों में घुमाना और जुलूसे हुसैनी के साथ उसकी तशहीर व प्रचार करना बिला शक व शुब्हा जायज़ व मुस्तहसन है और अहलेसुन्नत की एक दैरीना रिवायत और क़दीम मामूल है। कुरआने मुक़द्दस में अल्लाह पाक का हुक्म है,,(तर्जुमा)"और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ"(इब्राहीमःआयत5) तफ़सीर ख़ज़ायनुल

इरफ़ान में इसके तहत है हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़स्सिर मुरादाबादी रक़म फ़रमाते हैं,, क़ामूस में है कि अय्यामुल्लाह से अल्लाह की नेमतें मुराद हैं। हज़रत इब्ने अब्बास व अबी इब्ने अबी काब व मुजाहिद व क़तादा ने भी अय्याम की तफ़सीर(अल्लाह की नेमतें) फ़रमाई।मुक़ातिल का क़ौल है कि अय्यामुल्लाह से वह बड़े बड़े वक़ाए मुराद हैं जो अल्लाह के अम्र से वाक़ेअ हुये बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अय्यामुल्लाह से वह दिन मुराद हैं जिनमें अल्लाह ने अपने बन्दों पर इनआम किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन सलवा उतारने का दिन, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन(ख़ाज़िन व मदारिक व मुफ़र्रिदात राग़िब)इन अय्याम में सबसे बड़ी नेमत के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैह व आलिही वसल्लम की विलादत व मेराज के दिन हैं। इनकी याद क़ायम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है इसी तरह और बुर्जुगों पर जो अल्लाह तआला की नेमतें हुई या जिन अय्याम में वाक़आते अज़ीमा पेश आये जैसा कि दसवीं मुहर्रम को करबला का वाक़आए हायला उनकी यादगार में क़ायम करना भी तज़्कीर ब अय्यामुल्लाह में दाख़िल है बाज़ लोग मीलाद शरीफ़, मेराज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के अय्याम की तख़सीस में कलाम करते हैं इस आयत से नसीहत पज़ीर होना चाहिये.....।

इस तफ़सीर से यह मुतअय्यिन हो गया कि अय्यामुल्लाह से नेमतों के दिन, वाक़आते अज़ीमा के दिन मुराद हैं और उनकी तज़कीर व तशहीर का हुक्म अल्लाह तआला की तरफ़ से है और इसी में दसवीं मुहर्रमुल हराम भी शामिल है पस अगर ताज़िया व जुलूसे हुसैनी के ज़रिया गलियें कूचों वाक़आए करबला की याद दिलाई जा रही है और इस यादगारे हुसैनी की तशहीर की जा रही है तो यह ऐन हुक्मे इलाही के मुताबिक़ है इसमें कोई शरई क़बाहत नहीं है। नफ़्से ताज़िया में शरअन कोई क़बाहत नहीं है इसलिये कि अशया में अस्ल अबाहत है जिस तरह मुरव्वजा एरास में ममनूआते शरइया के ख़लत मलत के बावजूद नफ़्से उर्स

के जवाज़ में शरअन कोई कलाम नहीं है। इसी तरह नफ़्से ताज़िया के जवाज़ में शरअन कोई कलाम नहीं है बल्कि यह औलिया अल्लाह और बुर्जुगाने दीन के नज़दीक पसन्दीदा व महबूब है। हिन्दुस्तान व बर्रे सग़ीर की जितनी असली क़दीमी ख़ानक़ाहें हैं ताज़ियादारी का रिवाज व मामूल सारी ख़ानक़ाहों में है इल्ला माशा अल्लाह ।

ताज़ियादारी और बुर्जुगाने दीन का मामूल : उलमाए फ़िरंगी महल लखनऊ के पीर व मुरशिद और सिलसिलए क़ादरिया के अज़ीम बुर्जुग हज़रत शाह अब्दुल रज़्ज़ाक़ बांसवी अलैहिर्रहमह फ़रमाते हैं कि ताज़िया को यह न जाने कि यह ख़ाली काग़ज़ और पन्नी है। अरवाहे मुक़द्दसा भी इस तरफ़ मुतव्वजो होती हैं।(करामाते रज़्ज़ाक़िया, सफ़ा 15) माज़ी क़रीब के एक बहुत बड़े बुर्जुग सिलसिलए वारसिया के बानी हज़रत आलम पनाह हाजी हाफ़िज़ वारिस अली शाह ताजदारे देवा शरीफ़ अलैहिर्रहमत वर रिज़वान का इरशाद व अमल भी ताज़िया से मुतअल्लिक़ यह जानते हुये सुनें कि ख़बरदार ! ताज़िये को कोई यह न समझे कि ख़ाली काग़ज़ पन्नी और बांस की खपच्चियों का ढांचा है । मलहूज़ रहे कि अरवाहे कुदसिया सैयदुश्शोहदा अला नबीयिना व अलैहिस्सलात वस्सलाम और जुमला शोहदाए करबला इस तरफ़ मुतवज्जो होती हैं।"माहे मुहर्रम में हुज़ूर पुरनूर (वारिस पाक)ताज़िया ख़ानों में जाते थे और अब आख़िर ज़माने में भी देवा शरीफ़ में छोटी बीबी और घसीटे मियां के ताज़ियों में जाते थे कभी थोड़ी देर नशिस्त फ़रमाते और कभी सामने खड़े होकर चले आते थे। सुबह को कुल बसती के ताज़िये आपके दरवाज़े पर आते हुज़ूरे अनवर उस वक़्त बाहर तशरीफ़ रखते थे और खड़े हुये देखते रहते थे। जब ताज़ियादार ताज़ियों को लेकर चले जाते थे उस वक़्त हुज़ूरे अनवर (वारिस पाक) अन्दर तशरीफ़ लाते थे, ताज़ियों को देखते वक़्त चेहरए अनवर की अजीब हालत मुशाहिदे में आती थी और देर तक हुज़ूरे अनवर आलमे सुकूत में रहते थे । अशरए मुहर्रम और चहल्लुम के रोज़ आस्तानए आली पर सबील रखी

जाती थी।"(मिशकाते हक्क़ानिया अलमारूफ़ ब मुआरिफ़े वारसिया सफ़ा 110 मुवल्लिफ़ सैयद मोलवी फ़ज़्ल हुसैन साहब वारसी) हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का ताज़िया को कांधा लगाना अलल तवातुर मसमूअ है। मन्कूल अज़ असरारुल्लाह बिश शहादतैन सफ़ा 89

हज़रत अब्दुल रज़्ज़ाक़ बांसवी अलैहिर्रहमतु वर रिज़वान जिस वक़्त ताज़िया उठता नंगे पैरों तशरीफ़ ले जाते थे। जब तक ताज़िया रखा रहता तो आप हाथ बांधे खड़े रहते(करामाते रज़्ज़ाक़िया,सफ़ा 15) हज़रत शाह नियाज़ अहमद बरेलवी शबे आशूरा दो बजे ताज़िया की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते जब हुज़ूर को ज़ोफ़ ज़्यादा हो गया तो दूसरों की एआनत से तशरीफ़ ले जाते थे। हज़रत ने ताज़िया के तख़्त को बोसा दिया।(करामाते निज़ामिया,सफ़ा 337) शैख़ुल मशाइख़ ख़्वाजा हसन निज़ामी फ़रमाते है कि ताज़ियादारी में इशाअते इसलाम की भलाई पोशीदा है।(मनकूल अज़ फ़ातमी दावते इसलाम, सफ़ा 121) हज़रत शाह कुतुबुद्दीन संभली का मामूल था कि आपके सामने ताज़िया आता तो पलंग से नीचे उतरकर खड़े रहते और रोते रहते थे।(फ़तावा ताज़ियादारी सफ़ा 3) फ़तावा अज़ीज़िया सफ़ा 75 पर है कि ताज़िया के सामने जो रखकर फ़ातहा किया जाता है वह मुतबर्रिक है । मुफ़स्सिरे कुरआन अमीरे अहलेसुन्नत मौलाना मुहम्मद इन्तिख़ाब हुसैन क़दीरी साहब मद्दा ज़िल्लहू अपने हफ़्तरोज़ा अख़बार निदाए अहलेसुन्नत वीकली 21 फ़रवरी 2003ई0 में हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल सैयद मुहम्मद नईम उद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमह के मामूल को उनके साहबज़ादे हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद इज़हार उद्दीन साहब नईमी उर्फ़ हनफ़ी मियां के हवाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सदरूल अफ़ाज़िल हमेशा ताज़िया बनाने में चन्दा देते थे और आपने अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िये की मुख़ालिफ़त न की। ख़ानवादए मदारिया के मशाइख़े एज़ाम व उलमाए किराम ताज़िया के जुलूस में बड़े एहतेमाम के साथ शरीक होते हैं। आगे

आगे ताज़िया होता है पीछे उलमा व मशाइख़ का जम्मे ग़फ़ीर होता है। मरासी व नौहाजात पढ़े जाते हैं अकसर बुर्जुगों की आंखें इस मौके़ पर अश्कबार होती हैं। ख़ानक़ाहे मुक़द्दसा की तरफ़ से दरगाह शरीफ़ की मालियत से दो अज़ीमुश्शान करबला निशान कर्बला निशान ताज़िये बनाये जाते हैं जो नवीं मुहर्रमुल हराम की शब में उठाये जाते हैं। दसवीं मुहर्रमुल हराम की शामे ग़रीबां तक गश्त करते हैं। आख़िर में दम्माल शरीफ़ में फ़ातहा ख़्वानी व तक़सीमे लंगरे अज़ीम होती है और ताज़ियों को दरगाह शरीफ़ के दालान में रख दिया जाता है।

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का ताज़िया : इसी तरह 25 मुहर्रम शरीफ़ को सैयदना हुज़ूर बाबा फ़रीद उद्दीन मसऊद गंजे शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उर्से मुबारक के मौके़ पर हुज़ूर बाबा साहब का चिल्ला ख़ाना खुलता है जिसमें सैयदना सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ हुज़ूर मुईनुल मिल्लत वद्दीन अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का चांदी का ताज़िया शरीफ़ रखा हुआ है। ज़ायरीन उसकी ज़ियारत से फ़ैज़याब होते हैं।(दीने मुहम्मदी और ताज़ियादारी बहवाला ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म सफ़ा 30)

अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी

व सल्लल्लाहु अला ख़ैरि ख़लक़िही सैय्येदेना मुहम्मदिवं व आलिहिल अतहारि व असहाबिहिल अख़यार





मदार बुक डिपो

खानक़ाहे ज़िन्दा शाह मदार, मकनपुर शरीफ़, कानपुर (यू0पी)

का क़दीम दीनी कुतुब खाना है

जिसने

सिलसिलए आलिया मदारिया

की कई नायाब कुतुब को शाए करने का

शरफ़ हासिल किया है

और सिलसिले की इशाअत और फरोग़ में

नुमायाँ ख़िदमात

अन्जाम दे रहा है ।

दीनी किताबों के अलावा

तसव्वुफ़ और ख़ानक़ाही

किताबें ख़ास तौर से यहाँ दस्तयाब हैं।

राब्ते के लिये पता

मुफ़्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी

मोबाइल न. :9793347086

कम्पोज़िंग : स्माइल ग्राफ़िक्स, कानपुर (9455306981)